आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 5 | अंक 08 | उदयपुर शुक्रवार 01 मई 2020 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

मास्क पहनें मगर सावधानियों के साथ

- डॉ. डोली मोगरा -

वैश्विक महामारी के दौर में कोरोना वायरस से बचाव के लिए मास्क पहनने में सावधानी भी जरूरी है। चिकित्सकों और विशेषज्ञों की मानें तो सुरक्षित रहने के लिए हर व्यक्ति के लिए मास्क पहनना जरूरी है। प्रदेश के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने तो कोरोना महामारी की रोकथाम के लिए प्रदेश के सभी 196 नगरीय क्षेत्रों अर्थात् नगर निगम, नगर पालिका एवं नगर परिषद तथा कृषि मंडियों में अनिवार्य रूप से मास्क पहनना सुनिश्चित किया जाना कहा है। मास्क पहनने का उद्देश्य संक्रमण व संपर्क से बचना है। ऐसे में मास्क की स्वच्छता व सुरक्षा उतनी ही आवश्यक है जितनी जीवन की सुरक्षा।

मास्क नाक मुंह और ठोढ़ी को कवर करने वाला सुरक्षात्मक कवच है । स्वयं को किसी संक्रमण से बचाने के साथ-साथ अन्य लोगों की संक्रमण से रक्षा करने, इंसान में जाने-अनजाने अपने हाथों से बार-बार अपने चेहरे, नाक, मुंह, आंखों को छूने की आदत होने से संक्रमण की संभावना से बचने, चेहरे को गंदे संक्रमित हाथों से छूने की आदत से निजात पाने तथा संक्रमण के सर्वाधिक संभावित स्थलों व सतहों से स्वयं व अन्य की रक्षा के लिए मास्क पहनना जरूरी है।

किसी कार्य से घर से बाहर जाने, चिकित्सालय या क्लीनिक जाने, बुखार, बहती नाक, नाक से पानी टपकना, खांसी-छींक होने, घर में किसी भी सदस्य को सर्दी खांसी व श्वसन संबंधी परेशानी होने अथवा संक्रमित रोगी की देखभाल करते समय भी चिकित्सक द्वारा मान्य मास्क पहनना चाहिये।

मास्क खरीदते समय यह जरूरी है कि वह नया हो, खुले में नहीं बिक रहा हो, डिब्बे या पॉलिथीन पैक में हो। कपड़े वाले मास्क सूती कपड़े से ही बने होने चाहिए। होजरी से बना मास्क भी सूती धागे से निर्मित होना चाहिए। घर में तैयार मास्क भी स्वच्छ सूती कपड़े से बने हों। मास्क सफेद रंग का उपयुक्त है क्योंकि स्वच्छ रखने के लिए उसे जल्दी-जल्दी धोने की जरूरत पड़ेगी जिससे स्वच्छता बनी रहेगी। क्रीम, गुलाबी, हल्का हरा, हल्का नारंगी आदि हल्के पेस्टल रंग वाले सूती कपड़े के मास्क का चयन भी किया जा सकता है। अत्यधिक गहरे जैसे काले, गहरे नीले, बैंगनी महरून रंग वाले मास्क नहीं पहनें तो अच्छा रहेगा।

हाथों को अच्छे से धोने के बाद ही मास्क हाथ में लें। कपड़े का बना मास्क खरीदते ही मुंह पर नहीं लगाएं। रि-यूसेबल कपड़े का मास्क साफ धोकर ही उपयोग में लें। यूज एंड थ्रो मास्क को धोने की आवश्यकता नहीं है। मास्क को साफ चेहरे पर ही धारण करें। गीले चेहरे पर मास्क पहनने से बचना चाहिए। मास्क से नाक -मुंह-ठोढ़ी तीनों ढके रहने चाहिएं। पहने हुए मास्क को दो से तीन घंटे में धो लेना चाहिए कारण कि मुंह से निकलने वाले थूक से यह गीला हो जाता है। ऐसे में किसी भी संभावित संक्रमण से बचने के लिए नियमित अंतराल पर कपड़े वाले मास्क को बदलते रहना आवश्यक है। यदि हमें किसी भी प्रकार की खांसी -जुखाम है तो

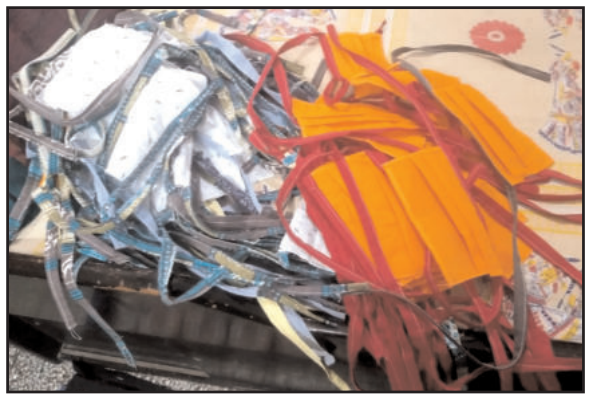

मास्क स्वच्छ होना आवश्यक है। परिवार व अन्य किसी व्यक्ति के धारण या उपयोग में लिए गए मास्क को धारण नहीं करना चाहिए।

एक ही मास्क को हर दिन नहीं पहनें। कम से कम हर व्यक्ति के पास दो मास्क होने चाहिएं। मास्क के रूप में दुपट्टा, स्कार्फ, साड़ी का पल्लू, रूमाल इत्यादि का उपयोग करने में सावधानी रखें कारण कि इससे संक्रमण का खतरा बना रहता है।

मास्क पहनते व उतारते समय हाथ पूर्ण रूप से धुले हुए या सेनेटाइजर से साफ किए हुए होने चाहिएं। पहने हुए मास्क को बीच-बीच में उतारकर गले में लटकाने की आदत से बचें, क्योंकि यह संक्रमण को बढ़ा सकता है। मास्क को खोलकर किसी के हाथों में नहीं दें। सीधा उसे धोकर सुरक्षित स्थान पर सूखादें।

मास्क को वॉशिंग मशीन में अन्य कपड़ों के साथ नहीं धोना चाहिए। परिवार के सभी सदस्यों के मास्क एक साथ नहीं धोने चाहिए। मास्क को धोने के बाद धूप में सुखाना चाहिए । मास्क को ऐसी जगह सुखाएं जो अन्य लोगों की पहुंच से दूर हो। मास्क को दरवाजे, कुर्सी के हेंडल, डाइनिंग टेबल, टीवी तथा मोबाइल के साथ रखने से बचें। ऐसे स्थानों पर मास्क के ज्यादा लोगों के संपर्क में आने की संभावना बनी रहती है। धोए गए मास्क के सूखते ही उसे विसंक्रमित करने के लिए गरम प्रेस का उपयोग किया जा सकता है। मास्क को समेटकर स्वच्छ स्थान पर ही रखें। परिवार के प्रत्येक सदस्य के मास्क की पहचान हो ताकि एक-दूसरे का मास्क पहनने से बचा जा सके।

सामान्य सर्दी खांसी जुखाम व श्वसन संबंधित तकलीफ होने पर उपयोग में लिए गए मास्क को गर्म पानी, साधारण ब्लीच या साबुन से धोना चाहिए ताकि संभावित संक्रमण को रोका जा सके। यूज एंड थ्रो वाले मास्क को एकबार उपयोग में लेने के बाद सही ढंग से पेपर बेग या अखबार के पेपर में लपेटकर ढक्कन वाले कचरा पात्र में ही डालें। उपयोग में लिए गए मास्क को रोड़, किसी खुले स्थान या सार्वजनिक स्थल पर भूलकर भी नहीं डालें।

गलत तरीके व गलत प्रकार के मास्क पहनना किसी भी व्यक्ति के लिए हानिकारक साबित हो सकता है। इससे संक्रमण का खतरा बढ़ सकता है क्योंकि मास्क को ठीक करने के लिए व्यक्ति बार-बार अपने मुंह पर हाथ लगाने से नहीं चूकता है। मास्क पहनने से कई लोगों को लगता है कि वे सुरक्षित हैं जबकि जीवन की सुरक्षा के लिए स्वच्छ हाथों व स्वच्छ मास्क दोनों अति आवश्यक हैं। मास्क लगाकर जहां भी जायें, भीड़ से बचें और दूरी बनाये रखें।

आभार एवं हौसला अफजाई के लिए लेकसिटी की पुलिस ने रूट मार्च किया। इस दौरान जगह-जगह पुष्पवर्षा कर रूट मार्च का स्वागत किया गया।

खोज-खबर

वागड़ का संत-भक्त समाज

राजस्थान का दक्षिणी अंचल वागड़ नाम से जाना जाता है। इसमें डूंगरपुर तथा बांसवाड़ा जिला है। यह आदिवासी भील जाति का प्रमुख क्षेत्र है। इन्हें बसाने वाले भी डूंगरिया तथा बांसड़ा नामक आदिवासी थे। इन आदिवासियों में प्रचलित 108 गोत्रें हैं।

ऐसी प्रसिद्धि है कि बांसवाड़ा के धारणा गांव से ही इनकी उत्पत्ति हुई। एक नरू नाम का राजा था। उसके कोई संतान नहीं होने से 108 पालने बंधवाने की मनौती बोली जिससे 108 संतानें हुईं। बांसवाड़ा में सभी गोत्रों के आदिवासी मिलते हैं। मैंने सभी की गोत्रें भी अपनी एक शोध कृति में दी हैं।

यहां के गिरिवनों में अनेक संत-महात्मा हुए। उन्होंने अनेक धूणियां तपीं। आज भी तप रहे हैं। सर्वाधिक चर्चित तो मावजी ही हुए। उनका तपस्थल बेणेश्वर आज भी दूर-दूर तक प्रसिद्धि लिए आदिवासी समाज का कुंभ बना हुआ है।

उसके नजदीक ही साबला गांव में मावजी का गादी-स्थल है। मावजी के अलावा गुरु गोविन्द तथा सूरमालदास जैसे नामी संत हुए। मानगढ़ धाम भी इधर ही है जो जलियांवाला बाग की तरह ही ऐतिहासिक महत्व लिये है। इन पर काफी प्रकाश डाला जा चुका है।

इनके अलावा और भी प्रसिद्ध संत-भक्त हुए जिन्होंने भक्ति आन्दोलन के माध्यम से आदिवासियों में जीवनशुद्धि की अलख जगाई। उपदेशों के माध्यम से आत्मा की अवस्थिति तथा हिंसक वृत्ति त्याग चोरी, डकैती, जीवहत्या से बचते रहकर सात्विक जीवन जीने की प्रेरणा दी। उनके अनेक अनुयायी बने। कुछ प्रमुख संतों पर यहां जानकारी द्रष्टव्य है।

(1) जालदास :

संत सूरमालदास के उपदेशों से प्रभावित हो अनेक अनुयायी बने। उनमें उनका पुत्र जालदास भी है जिसने अपने पिता से दीक्षित हो भक्तिमार्ग का अनुसरण किया। सूरमालदास का यह एक ही पुत्र था। उस पर उसके पिता के संस्कारों का बड़ा जबर्दस्त प्रभाव पड़ा। फलस्वरूप उसका मन भी उचट गया और संतगामी बन गया। अपने पिता की भक्ति-बेल का उसने गांव-गांव अलख जगाया।

जालदास का जन्म सन् 1885 के आसपास लसुड़िया गांव में हुआ। उन्होंने गांव-गांव भ्रमण कर जीवहत्या, मांस-मदिरा सेवन तथा चोरी-डकैती का त्याग कर जीवन को स्वच्छ पवित्र रखते हुए ईश्वर की आराधना करने पर बल दिया।

(2) अंबा भगत :

बांसवाड़ा की गढ़ी तहसील से दक्षिण-पश्चिम में निर्मित कडाणा बांध के दौरान जलमग्न हुए मैसाऊ नामक गांव में इनका जन्म हुआ। संगमेश्वर के शिवालय, हगम बावसी की उपासना करने के कारण इन्हें दिव्य अनुभूति हुई और अलौकिक शक्ति मिली। जाति से ये डामोर थे। ज्योतिष विद्या में पारंगत तथा भूत-भविष्य के ज्ञाता एवं आकाश, हवा, तारे देख मौसम की भविष्यवाणी करने में पारखी थे। जड़ी-बूंटियों से इलाज करने में माहिर थे।

(3) पूंजा भगत :

पूंजा भगत ज्योति महाराज के ज्येष्ठ पुत्र थे। ज्योति महाराज भी पक्के संत-भक्त थे जो गुरु गोविन्दसिंह के सहयोगी रहे। ज्योति महाराज के बाद पूंजा को विरासत में उनका पाट मिल गया। फलस्वरूप उनके बाद वे नवाधरा पंचायत के थाली तराई गुरूद्वारे में महंत बने। गादी, धूणी, त्रिशूल, तीर, कमान, कोटवाल इन्हें सहज उपलब्ध हो गये। गोविन्द गुरू तथा अपने पिता की तरह ये भी अपने भक्तों में जागृति का शंख फूंकते रहे।

देव दीवाली को गुरूद्वारे पर विशाल मेले में दीक्षित भक्त-भील परम्परागत पोशाक पहन सम्मिलित होते हैं। पिता की तरह ये भी मानव तथा पशुओं का जड़ी-बूंटियों से इलाज करते हैं। साक्षरता का प्रचार भी इनका प्रमुख ध्येय रहा।

(4) गलजी भगत :

इनका जन्म भील परिवार में पिता नाथजी तथा माता थावरी के घर 1890 के आसपास बावड़ी गांव में हुआ। एकदिन नाथजी के पास एक बटोही आया। वह ज्योतिष विद्या का जानकार था। उस टेलिये से उन्होंने पुत्र प्राप्ति बाबत पूछा तो उसने उन्हें संन्यासी बनना बताया। नाथजी ने गृहस्थी छोड़ने की बजाय गेबी से विवाह कर लिया। सौलह वर्ष का था तब वह मानगढ़ गया और गुरु गोविन्द की संप सभा की सदस्यता ले ली। गलजी ने उनसे भगत बनने को कहा तब नाथजी ने गेबी सहित दीक्षा ले ली। मानगढ़ पर हुए आन्दोलन के समय गलजी ने भी गोलियों की बौछार देखी। इकतारे पर भजन गाने में वह माहिर था। उसके बनाये भजन भी सुनने को मिलते हैं।

(5) जोरजी भगत :

गोविन्द गुरु की धूणी के महंत तथा सेवक के रूप में प्रसिद्ध जोरजी भगत बांसवाड़ा के आनन्दपुरी कस्बे के बावड़ी गांव में जन्मे। प्रारम्भ में ये खूंखार प्रकृति के थे। लूटपाट करने के कारण ठाकुरों तथा जमीदारों में ये कुख्यात थे। आनन्दपुरी के ठाकुर के वहां जबर्दस्त लूटपाट के कारण ये सिपाहियों से बचते-छिपते मानगढ़ के घने जंगलों में जा छिपे। वहीं गोविन्द गुरु से भेंट के दौरान इनका हृदय परिवर्तन हुआ।

संपसभा के सदस्य बन दीक्षित हो गये। मानगढ़ गोलीकाण्ड में इनकी पगड़ी को चिरती गोली निकल गई। 1950 में जोरजी का निधन हुआ। उनके बाद उनका पुत्र नाथू भी उन्हीं की राह पर भगत आन्दोलन में सक्रिय है। कहते हैं उनके पास वह ऐतिहासिक पगड़ी सुरक्षित की हुई है।

(6) पूंजा भगत :

गुजरात की सीमा से लगे झालोदनगर के भीली गांव डूंगर में सबला भील के घर जन्म लेने वाले पूंजा भगत गोविन्द गुरु के शिष्यों में थे। पंचमहल के जागीरदार के घर खेती-बाड़ी करते अपने गुस्सेल स्वभाव के कारण जागीरदार के कारिन्दे से बुरी तरह उलझते उसकी हत्या तक कर दी।

रहस्यमय ढंग से वहां से चलकर ईडर के भील परिवार में कृषि कार्य करते मुखिया ने अपनी लड़की विवाहित कर खेतिहर जमीन बख्श दी। ईडर के राजा का थानेदार बड़ा क्रूर था, अत्याचारी एवं व्यभिचारी था। उसने उसकी पत्नी के साथ छेड़खानी की कोशिश की जिस पर पूंजा ने उसे मृत्यु के घाट पहुंचाकर चौराहे पर लटका दिया।

ईडर के राजा को यह कृत्य ठीक नहीं लगा तो उसे छोड़ गोविन्द गुरु के साथ हो संपसभा की सदस्यता ले ली। धीरे-धीरे भजन, यज्ञ, हवन, उपदेश सभी में प्रवीण हो गया। आग के पास तपने का अभ्यासी हो गया। समाज सुधारक तथा क्रांतिकारी बन आदिवासियों में भगत के रूप में चर्चित हुआ। मानगढ़ गोलीकाण्ड में धावा बोलते अंग्रेजों ने पूंजा को गिरफ्तार कर अंडमान भेज दिया किन्तु अपराधी नहीं होने पर मुक्ति पाकर आ गया पर स्वास्थ्य खराब रहने से वह सक्रियता समाप्त हो गई।

- कार्यालय संवाददाता

सपने से चित्र कोराई

02 अगस्त 2006 को उदयपुर से 12 किलोमीटर दूर नाई से आगे छोटी ऊंदरी गांव में भगवान कच्छावा तथा दिल्ली की इन्दिरा मुखर्जी के साथ आदिवासी चित्रकारों से भेंट करने गया। पहले भी इस गांव में मेरा जाना हुआ। मुख्य सड़क पर काला-गोरा भैरू का देवरा है। उसके पीछे नदी पार कर बस्ती में पहुंचना पड़ता है। गांव बेतरतीब बसावट लिए है। प्राकृतिक सुषमा की दृष्टि से दर्शनीय है।

यहां फूला पारगी का परिवार ही अकेला ऐसा है जो चित्रकारी करता है। फूला के अलावा उसकी पत्नी जीवली तथा पुत्री चम्पा, पुत्र धूला, बंशी भी चित्र बनाने में होशियार हैं। फूला के चित्रों को हम पूर्व में भी देख चुके थे। यों इस परिवार में दस पीढ़ियों से चित्रकारी की परम्परा है। फूला का दादा, परदादा ही नहीं लड़पड़दादा तक ने इस क्षेत्र में पहचान बनाई। फूला ने बताया कि उसके अंकल का लड़का भीमा भी चित्रकारी में होशियार है।

भीमा को बुलाया गया। उसने जितने भी चित्र दिखाये वे बेमेल के थे सो हमें भी अचरज लगा। पूछा तो उसने बताया कि उसके पिता गोमा ने एक दिन कहा कि हू-ब-हू चित्र नहीं बनाना है। हमशक्ल आकृति वाली तो पूरी सांसारिक लीलावली है मगर यह लीला भी ध्यान लगाकर देखने पर एक जैसी नहीं है। एक जैसी तो कैवत में है। सबकी ओलख पिछाण जुदा-जुदा है। सबके खेत, सबके टाबर टींगर, झोंपड़े, ढांढाढोर न्यारी-न्यारी पिछाण रखते हैं।

भीमा कहता रहा। हम उसकी ओर टकटकी दे देखते-सुनते रहे। मैं दूसरे भाव

लोक में पहुंच गया। सोचने लगा, यह छोकरा कितना भोला, सीधा और सहज मन का है।

कुदरत के रहस्यों का परदा खोल रहा है और स्वयं अनजाना बना हुआ है। सचमुच में प्रकृति निर्मित और मानव निर्मित पदार्थ एक जैसे नहीं हैं।

भीमा ने बताया कि पिता की कही बात वह रात को सोते समय भी सोचता रहा। एक जैसे चित्र नहीं बनाऊंगा तो गधे-घोड़े में फर्क ही क्या रहेगा। इस सोच विचार में उसे पता ही नहीं चला कि कब नींद लग गई। रात को सुपना दिया कि झिझक मत कर, जो तार मन में चल रहा है, कागज पर कोर कर देख। अच्छे बुरे की चिन्ता मत कर।

तबसे उसने चितराम माण्डने की झड़ी लगा दी। ये सब वे ही चित्र हैं। ताजे के ताजे। बण्डल खोल उसने एक-एक चित्र बताना शुरू किया। हम अपलक देखते रहे। अचरज करते रहे। विस्मित होते रहे। वे चित्र थे-

(1) सिंयाल अर्थात् गीदड़ की पूंछ जमीन को समेटे और पेट फूला हुआ।
(2) शेर पर शिकार उछाल खाते हुए।
(3) हाथी का एक कान बकरी का तथा दूसरा भेड़ का।
(4) गधा चेहरा बकरी का लिये।
(5) नाचते मोर के छोटे पंख, मुंह बतख-सा तथा चोंच चिड़िया-सी।
(6) हाथी की सूंड नीचे से दो मुंह किये।
(7) हाथी का सिर कपड़े से ढका ऊपर महावत टांग फैलाये।
(8) बिल्ली का मुंह लिए ऊंदरा, पीछे से पूंछ मोटी।
(9) वेरबला याने बिज्जु की सांप जैसी ठोड़ी।
(10) तीतर पर कबूतर की सवारी।
(11) भगवान की मूरत पर बांदरा बिल्ली की पूंछ वाला।

- डॉ. महेंद्र भानावत

स्मृतियों के शिखर (98) : डॉ. महेन्द्र भानावत

बनवारीदत्त : याद आता है हंसने हंसाने का चेहरा

बनवारीजी ने ऐसों को भी हंसाया जो कभी हंसे ही नहीं। वे हंसी को छूमंतर से शिला-अहिल्या की तरह जड़-मुख से हंस-मुख बनाने के दक्ष शिल्पी हैं। हंसी ठट्ठा, दिल्लगी, मसखरी करने, दूसरों की नकल उतारने, बहुरूपियों जैसे स्वांग भरने, एक चेहरे के अनेक चेहरे बनाने का करतब बनवारीजी बचपन से करते आ रहे हैं। जगह-जगह की लाफ्टर क्लबें जहां हंसी का कृत्रिम वातावरण देती हैं वहां बनवारीदत्त जहां भी अपनी उपस्थिति देते हैं वहां स्वत: ही हास्य समन्दर ठाठे मारता पूरी प्रकृति तक को बाग-बाग किये रहता है।

सन् 1952-54 में 9वीं-10वीं के अध्ययन के दौरान जब मैं छोटीसादड़ी गोदावत जैन गुरुकुल में रहा तब मुख्यत: साप्ताहिक सभा में वहां अध्ययनरत रहे बनवारीदत्त जोशी की चर्चा सुन अचरज करता कि वे हर सभा में पढ़ाने वाले गुरुजनों तथा अन्य चर्चित पात्रों के हू-ब-हू हावभाव निकालने का कमाल कर सबको हंसी से लोटपोट किये रहते। खास बात यह रहती कि वे अपने मुंह पर किसी तरह का मुखौटा नहीं लगाकर उनकी स्वयं की शक्ल बनाने की कला ही सबको विस्मित किये रहती। यों उनके चेहरे पर हर समय ही मुस्कान बनी रहती थी। लगता, उनके बिना हंसी मसखरी को भी कोई और ठौर नहीं है।

सन् 1957 में गुरुकुल की रजत जयंती मनाई गई तब भी मैं गया था। उसमें मालवा के हास्य कवि कुंजबिहारीलाल पांडेय की पढ़ी कविता 'आगरा में रूक गई ट्रेन चीखती हुई' का मुझे स्मरण हो रहा है। कविता पढ़ते-पढ़ते उनका ट्रेन की चीख और उस समय की छुक-छुक करता चेहरा कुछ-कुछ अभी भी याद पड़ रहा है। उसी समारोह में उदयपुर से प्रकाश 'आतुर' आये थे जो उस समय जवानी की सम्मोहक ताजगी लिये पहली बार देखने को मिले। उन्होंने कविता पढ़ते समय कई बार ऊंचे स्वर के साथ अपनी ऊंचाई देती एड़ियों के बल खड़े होकर कविता को बुलन्दगी पर पहुंचाई थी।

मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत मेरे से पूर्व तीन वर्ष 8वीं से 10वीं तक वहां पढ़े थे। वे वहां साहित्य की हर विधा में ही नहीं, पढ़ने में भी सदा अव्वल रहे। दसवीं बोर्ड का परिणाम बहुत खराब रहा। कुल बीस में से मात्र पांच छात्र उत्तीर्ण रहे। भाई साहब अकेले प्रथम श्रेणी लाये। कवि-रूप में वे तब तक कई जगह छपने लग गये थे। रजत जयंती पर उस कविसम्मेलन में उनकी पढ़ी कविता 'महल के पाषाण कुंठित, कुटीर कंकड़, आज मचला' सब ओर सराही गई। बनवारीदत्त तब रेलवे में थे। वे भाई साहब के साथी रहे। उस सम्मेलन में उन्होंने जो हास्य का जादू बिखेरा, उसकी छवि भी मेरे मानस पर अंकित है।

वे अपने एक दोस्त धन्नालाल को लाये जिसने 'यार तुम शादी मत करना, कुए में डूबकर मर जाना' गाने पर बड़ा प्रभावी नृत्य किया था। बनवारीजी ने 'बाबू देते जाना दाना' गाने पर हास्य अभिनेता ओमप्रकाश की जो नकल निकाली, यदि स्वयं ओमप्रकाश होते तो उन्हें बाहों में उछाल देते। भगवान भी जिसे कुबद देता है जी भर अपना खजाना खोल देता है। हास्य इसीलिए नव रसों में एक रस बन अपनी न्यारी पहचान देता है। बनवारीजी ने ऐसों को भी हंसाया जो कभी हंसे ही नहीं। वे हंसी को छूमंतर से शिला-अहिल्या की तरह जड़-मुख से हंस-मुख बनाने के दक्ष शिल्पी हैं।

साहित्य की दृष्टि से मेरा समय भी गुरुकुल में स्मरणीय रहा। उस समय की मेरी कविताएं तब के साथी अभी भी मुझे याद दिलाते हैं जो मैं भूल चुका था। वार्षिक उत्सव पर हुई प्रतियोगिता में कविता में तो मैं बाजी मारता ही पर अन्त्याक्षरी में भी एक बार मैंने अपनी आशु कविता बना-बनाकर ऐसा रंग जमाया कि निर्णायक स्तब्ध रह गये। एक तरफ वह छात्र था जिसके पास कई तरह के छन्दों का पिटारा था और दूसरी तरफ मैं जो तत्काल रचनाकर डटा हुआ था। अन्ततोगत्वा हार-जीत का कोई निर्णय नहीं रहा और जो पुस्तकें पुरस्कार स्वरूप हमें दी गईं, मेरे पास अब भी सुरक्षित की हुई हैं।

बनवारीदत्त 1982 में हुए स्नातक सम्मेलन में उपस्थित हमारे दौर के धीरज गांधी, सिरेमल सेठिया, देवीलाल चावत, पारस नलवाया, शान्ति चोर्डिया जैसे साथियों की याद दिलाते हैं जो अपनी गहरी पैठ दिये चिकित्सा, शिक्षा तथा समाजसेवा के क्षेत्र में आज भी अपनी विशिष्ट पहचान बनाये हैं। वे गुरुदेव सागरमलजी बीजावत, पुखराजजी जैन, राधामोहनजी पुरोहित, शोभाचन्दजी वया, कन्हैयालालजी शर्मा 'अनन्त' तथा गृहपति नानालालजी मट्ठा का श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हैं।

सर्वाधिक उल्लेखनीय सेवा देने वाले हेडमास्टर नेमिचन्दजी सुराणा की 1980 में सेवानिवृत्ति होने और उनकी जगह सेवानिवृत्त भंवरजी को लाने को वे भी अनुचित ठहराते हुए मेरे द्वारा जोरदार मुखर स्वर में कहे गये कथन को याद किये हैं- 'जब रिटायर्ड आदमी को ही लाना था तो सुराणा साहब क्या कम थे?' मुझे भी स्मरण है, सबने एक स्वर में इसका समर्थन करते हुए मुझे तालियों की गड़गड़ाहट से बांध दिया था।

छोटीसादड़ी के सोनाकाण्ड को सब कोई याद करते हैं। वे नाथूलालजी गोदावत थे जो सचमुच दानी थे। पुराने जमाने में दानवीर कर्ण था जिसने सोना दान किया था। गोदावतजी ने भी गुरुकुल बनाया ताकि बच्चे शिक्षा ग्रहण कर देश के अच्छे और सच्चे नागरिक बन सकें। वहां से पढ़कर जो भी निकलता वह पंडित कहलाता। ऐसे पंडित मेरे गांव में भी बने। पं. पूर्णचन्द्र दक धार्मिक गुरु और धर्म-शास्त्रों के ज्ञाता बने। पं. उदय जैन ने भी स्कूल खोला जहां आज दो-दो कॉलेज हैं। पं. महेशचन्द्र जैन हिन्दी साहित्य के धुरंधर विद्वान थे। मैंने इन तीनों का सान्निध्य पाया। गुरुकुल में पं. शोभाचन्दजी वया तथा पं. केसरी किशोरजी नलवाया से भी पढ़ा।

जब छपन्या (संवत् 1856) का अकाल पड़ा तब पूरा मेवाड़ भयंकर महामारी की चपेट में आ गया। मेवाड़ में अकाल तो पहले भी कई पड़े पर छपन्या का नाम आज भी कंपकंपी दे जाता है। उसके गीत अभी भी लोगों की जबान पर हैं।

बनवारीजी ने बताया कि अकाल पड़ने पर गोदावतजी ने मेवाड़ के महाराणा से अर्ज की कि उनकी आज्ञा हो तो वे पूरे मेवाड़ को भोजन खिलाकर उसकी रक्षा कर सकते हैं या फिर हुजूर की इजाजत हो तो उदयपुर से छोटीसादड़ी तक एक-के-पीछे-एक बैलगाड़ियों की लाइन लगवादें, वे सारी गाड़ियां अनाज से भरवाकर भिजवा देंगे। इस पर राणाजी का कण्ठ भर आया। उन्होंने गोदावतजी को छाती से लगा लिया। बोले, तुम धन्य हो। एक भामाशाह वह था जिसने राणा प्रतापजी के समय अपने धन-माल को उनके चरणों में समर्पित कर संकट काल की रक्षा की थी और दूसरे भामाशाह तुम हो जो आज अपना दिल खोलकर मेवाड़वासियों की सेवा के लिए कटिबद्ध हो।

सोनाकाण्ड की घटना सन् 1965 की है जब मोहनलाल सुखाड़िया राजस्थान के मुख्यमंत्री थे। छोटीसादड़ी में ऐसे लोग हैं जिन्होंने अपनी आंखों से छापा पड़ते देखा। पूरे मेवाड़ में तब राणाजी के महल के अलावा सेठ नाथूलालजी गोदावत की ही एकमात्र सात मंजिली हवेली थी। उससे लेकर आम सड़क के नीचे तक जो तहखाना था वह सोने की सिल्लियों से भरा था। यह अपार धन सेठजी ने अफीम का व्यापार कर कमाया था। वे चीन अपनी अफीम भेजते और बदले में सोने की सिल्लियां प्राप्त करते। इस अकूत खजाने से सेठजी स्वयं अनजान थे।

वहीं के चान्दमल नलवाया उनके मुनीम थे। उनके सम्बन्ध में कई तरह की अवधारणाएं सुनने को मिलती हैं। कहते हैं, सेठजी से पूर्व उनके निवास पर छापा पड़ा। उस दौरान उनके घर की तिजोरी में रखा सेठजी के खजाने का नक्शा छापावालों को मिला। उसके अनुसार छापा मारकर सेठजी का खजाना हस्तगत किया गया जो न्यायिक अभिरक्षा में कैद रहा और अब अदालती निर्णय के अनुसार सेठजी की चौथी पीढ़ी को मिला, सुना गया।

बनवारीजी बताते हैं कि उसके बाद सेठजी के पुत्र छगनलालजी नीमच के पास बघाना जाकर बस गये। उनके गुणवन्त नामक पुत्र का विवाह बड़नगर हुआ तब नीमच से बरातियों की पूरी स्पेशल ट्रेन ले जाई गई। लोकव्यवहार में आज तो छोटीसादड़ी का सोनाकाण्ड, सादड़ी का साहूकार, सादड़ी का भामाशाह जैसी कहावतें ही बन गई हैं।

हंसी ठट्ठा, दिल्लगी, मसखरी करने, दूसरों की नकल उतारने, बहुरूपियों जैसे स्वांग भरने, एक चेहरे के अनेक चेहरे बनाने का करतब बनवारीजी बचपन से करते आ रहे हैं। अपने आसपास जो घटनाएं बीतती देखते, सुनते, अनुभव करते हैं उन्हें ही अपना विषय बनाकर एक बुनकर की तरह उन्हें बुन-बुन, चुन-चुन कर बया पक्षी की तरह अपना घोंसला बुनते हैं। ऐसे अनेक मंचों, समारोहों, समाजों की शोभा में वे अपना लाफ्टरी कौशल दिखाते रहते हैं। इस हेतु अनेकबार वे पुरस्कृत-सम्मानित हुए और उन्हें हास्य सम्राट के रूप में दैनिक पत्रों ने भी बड़ा सम्मान दिया। जगह-जगह की लाफ्टर क्लबें जहां हंसी का कृत्रिम वातावरण देती हैं वहां बनवारीदत्त जहां भी अपनी उपस्थिति देते हैं वहां स्वत: ही हास्य समन्दर ठाठे मारता पूरी प्रकृति तक को बाग-बाग किये रहता है।

रेलवे की नौकरी छोड़ बनवारीजी टीचरशिप में आ गये और हेड मास्टर बने। अंतिम दस माह के लिए उनकी पोस्टिंग छोटीसादड़ी के राजकीय सीनियर हायर सैकण्डरी स्कूल में हुई जहां वे बचपन में पढ़ चुके थे। उन्होंने इसे अपने गांव और अपने स्कूल का उन पर चढ़ा कर्ज उतारने का स्वर्ण अवसर पाया।

देखा, स्कूल में खाली जगह पड़ी हुई पर कमरों का अभाव है। लेबोरेट्री कक्ष भी छोटा और अप्टुडेट नहीं है। जहां चाह पक्की हो कई राहें परत-दर-परत पक्कमपक्का बन आसान बन मार्ग प्रशस्त करती हैं वहां धारा काम आसान बन हर राह सुगम बन जाती है। उन्होंने स्कूल में अभिभावकों के समक्ष, गांव में जब-जब भी जहां समाज जुड़ा अथवा जोड़ने का अवसर मिला, अपनी चाह मोतबीरों तथा समाजजनों के बीच रखी तो सहायता के अनेक हाथ आगे आते गये।

बनवारीजी बताते हैं, सबको यथोचित सम्मान देते उनके अभियान को सबने सराहा और भरपूर सहयोग सम्बल देना प्रारम्भ किया। ऐसे करते-करते जैन समाज की सहायता से महावीर कक्ष, ब्राह्मण समाज के सहयोग से ब्रह्म कक्ष, विदेश में रह रहे दो बोहरा बन्धु सेफुभाई-फकरीभाई से लेबोरेट्री कक्ष, नये-पुराने शिक्षक समुदाय से शिक्षक कक्ष बनाया। पंचायत समिति प्रधान उदयलाल आंजना ने एक समारोह के दौरान घोषणा कर एक कक्ष तथा एक कक्ष उनके ब्याई कालूराम आंजना ने, एक कक्ष नीमच के दारूवाले सिंधी ने बनवाया। एन.के. जैन ने एक बरामदा बनवाने में सहयोग किया। उदयलाल आंजना वर्तमान में सहकारिता मंत्री हैं।

छोटीसादड़ी का, अपने प्रिंसिपल काल सत्र 1992-93 का वह समय बनवारीजी के जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अति उल्लेखनीय यादगार लिये रहा जब गांव वालों ने भी उन्हें हथेली पर उठा लिया। अपनी सेवानिवृत्ति का वह दिन वे कभी नहीं भूल पायेंगे जब पूरे गांव वालों ने दिल खोलकर बड़ी आत्मीयता से जुलूस के दौरान अपने-अपने गली-मोहल्लों में उनका स्वागत-अभिनन्दन किया। वैसी ऐतिहासिक यादगार छोटीसादड़ीवासियों ने न पहले कभी सुनी और न उसके बाद ही कभी देखी। सोने से भी अधिक सुनहरी और काया से भी अधिक कीमती वे यादें सीप में मोती की तरह बनवारीजी की पलकों में बनीठनी हर पल अपलक पुलकाती नि:शब्द कथन के अकथनीय बोल संजोये अविराम रंजित बनी हुई हैं।

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 01 मई 2020

सम्पादकीय

कोरोना के संकट

पूरे विश्व में कोरोना के संकट की घड़ी रेत घड़ी की तरह करमरा रही है। जहां-जहां भी जीव जगत है वहां कोरोना की चपेट की घटनाएं गर्म तवे सी झुलसा रही हैं। अखबार का हर पन्ना कोरोना का रोना रो रहा है। रेडियो, टेलीविजन की हर खबर कोरोना को सुर्खियों में लिये है। मोबाईल पर हर समय कोरोना की जानकारी ली-दी जा रही है।

सारे राष्ट्राध्यक्ष चिंतित हैं। उनके हिस्से की जनता कहीं संभल नहीं रही है तो कहीं मौत मगर के मुंह में मच्छी सी धकेली जा रही है। शोध की हर लेबोरेट्री में कोरोना के मात के उपाय खोजे जा रहे हैं। खोज यह भी गंभीरपन में है कि कहीं कोई राष्ट्र अपनी हेंकड़ी, प्रभुत्व, वर्चस्व या दादागिरी के लिए तो कोरोना वायरस नहीं बना रहा है। भीतर ही भीतर एक राष्ट्र दूसरे पर हावी होने या कि उसे नीचा दिखाने या कोई कसर निकालने का षड़यंत्र तो नहीं रच रहा है।

बड़ों के साथ छोटों की पिलपिली होने की कहावत उसी तरह है जैसे गेहूं के साथ घुन का पिसा जाना। चैनलों पर बहस का बाजार गर्म पकौड़े की तरह चना जोर गरम है। एक्सपर्ट तथा पार्टियों के प्रवक्ता अपना-अपना पक्ष रख रहे हैं। कुछ गरिमापूर्वक, कुछ उग्र होकर, कुछ तैश में आकर तो कुछ कोई सुने या न सुने, गला फाड़-फाड़ कर बोले जा रहे हैं।

शहर-गांव-गली सब ओर का जड़-चेतन, वातायन कोरोना की गूंज से अटा पड़ा है। सेवाकर्मी डाक्टर, नर्स तथा स्वास्थ्य से जुड़े, सफाईकर्मी, जरूरतमंदों के लिए भोजन बनाने वाले, पैकेट पहुंचाने वाले, अखबार बांटने वाले, जान की परवाह किये जी जान से, घर-परिवार से विलग रह रोगियों की सेवा में लगे हुए हैं। ये सब ईश्वरीय आत्मा के रूप में हर जबान पर अभिवंदनीय बने हुए हैं।

घरों में दुबके बच्चे, बूढ़े तथा अन्य जन कोरोना से हर संभव बचाव लिये अनुशासित संकल्पबद्ध सेनानी बने हुए हैं। सब समयबद्ध अपने-अपने कारज में लगे हैं। स्तंभकार, साहित्यकार, चित्रकार, शिल्पकार सब कोरोना से संबंधित उपयोगी सृजन में लगे हए हैं।

इन सबसे परे हर संवेगी, संवेदनशील अपने परिवार के साथ समय दे रहा है। ऑन लाईन पढ़ाई, परीक्षा और कार्यालयीय काम हो रहे हैं। दान देने वालों ने दानवीर कर्ण, नरसी मेहता तथा भामाशाह की परम्परा को पराकाष्ठा देना शुरू कर दिया है।

पूरे विश्व में भारत की इस घड़ी में कोरोना को लेकर जो तैयारी, बचाव के उपाय, दूसरों के प्रति सहयोग, भाईचारा, सौहार्द, सहकार के भाव के कारण जो वाहवाही हो रही है वह भी प्रशंसनीय है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जमीनी लोग, जमीनी हालात और जमीनी हरकत से पूर्णत: जुड़े रहकर स्वयं वह सब कर रहे हैं जिसकी हर आम खास को अपेक्षा है। संकट की घड़ी में भारत सबका सिरमौर बना हुआ है इसका तनिक भी गर्व नहीं कर उस एहसास को लिए हर भारतवासी दुगुने चौगुने शतगुने साहस उत्साह और उमंग के लिए जैसा लगा हुआ है, लगा रहे।

साहित्यकार ओंकारश्री की रूग्ण पत्नी को सहयोग के बढ़े हाथ

उदयपुर (कार्यालय संवाददाता)। हिन्दी-राजस्थानी के प्रसिद्ध साहित्यकार स्व. ओंकारश्री की पत्नी सूर्या पारीक के मूत्र रोग तथा अन्य व्याधियों से पीड़ित होने पर लोककलाविज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत ने गहरा दुख जताया। उन्होंने तत्काल सहायता स्वरूप अपनी ओर से ग्यारह हजार एक सौ एक रूपये की सहायता की।

कोरोना के चलते डॉ. भानावत पिछले एक माह से अपने घर में रहने के कारण सहयोग की यह राशि उनके सुपुत्र डॉ. तुक्तक भानावत ने 15 अप्रेल 2020 को श्रीमती पारीक के निवास पर जाकर दी।

डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि ओंकारश्री से उनका सम्बंध बीकानेर में अध्ययन के दौरान सन् 1954 से 1958 तक रहा जब वे उनके अग्रज डॉ. नरेन्द्र के साथ डूंगर कॉलेज के विद्यार्थी थे और 1956 में नरेन्द्रजी का विवाह हुआ तब भी वे कानोड़ आये थे।

उल्लेखनीय है कि श्रीमती सूर्या पारीक को 50 हजार रूपये का आर्थिक सहयोग प्रदान करने के लिए जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) उदयपुर के अध्यक्ष के नाते डॉ. तुक्तक भानावत ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को भी पत्र लिखा है। दिनांक 18 अप्रेल को भेजे गये पत्र में लिखा कि ओंकारश्री जुझारू साहित्यकार के रूप में आजीवन कलम को समर्पित रहे। वे राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के प्रथम सचिव तथा राजस्थान साहित्य अकादमी के सहायक सचिव रहे। उनके पीछे उनका एकमात्र पुत्र पवन है जो मानसिक दृष्टि से कमजोर है।

स्व. ओंकारश्री

राजस्थान साहित्यकार परिषद के संस्थापक एवं सम्बोधन पत्रिका के सम्पादक प्रख्यात साहित्यकार कमर मेवाड़ी, अभिनव सम्बोधन के सम्पादक-संरक्षक मधुसूदन पंड्या तथा कोषाध्यक्ष शेख अब्दुल हमीद ने भी तत्काल सहायतार्थ ग्यारह हजार का चैक प्रेषित किया।

फतहलाल नागोरी सूर्या पारीक को चैक सौंपते हुए।

इसी क्रम में 22 अप्रेल को वरिष्ठ कांग्रेसी एवं उल्लेखनीय समाजसेवी एडवोकेट फतहलाल नागोरी ने कोरोना के चलते घर से बाहर नहीं निकलने पर भी तुक्तक को साथ लेकर सूर्याजी से मिलने और कुशलक्षेम पूछने उनके निवास पर पहुंचे और ग्यारह हजार रूपये की सहायता की।

पोथीखाना

'गर्म नदियां तैर कर' बनते कथानक वक्त के

बृजेन्द्र कौशिक नव प्रयोगधर्मी काव्य सृजन के सजग विश्वासी हैं। कवि की दृष्टि में प्रस्तुत संकलन वर्तमान के दर्शनीय और पठनीय यथार्थ की अन्तर्वस्तु को समझने और पहचानने के सभी पहलुओं पर चिन्तन करने के लिए प्रेरित करेगा। चार-चार पंक्तियों में निबद्ध प्रत्येक छन्द कमधिक 8 से लेकर 18 मात्रा में अपना सम्पूर्ण कथ्य प्रस्तुत करने की वैचारिक क्षमता में सक्षम है।

हर पद लय और गति में प्रवहमान होते हुए भी किसी छन्द विशेष की अलंकारिता में आबद्ध नहीं होकर अपनी उपस्थिति का सर्वथा विलग जड़ाव लिये है। पठनीय, मननीय और करणीय नामक तीन सोपानों में विभाजित 'गर्म नदियां तैर कर' कृति की सार्थकता के लिए कवि का यह छन्द द्रष्टव्य है-

गर्म नदियां तैर कर
जो पहुंचते गंतव्य तक
हौंसले उनके ही
बनते हैं कथानक वक्त के।

पुस्तक के प्रारम्भ में ही अपने 'अभिधेय' में कवि स्वयं का कथ्य ही पुस्तक का सार प्रस्तुत कर आश्वस्त करता है-

(1) क्रिया तक पहुंचने के लिए अन्त: सृष्टि का बहुत कुछ तोड़ना, त्यागना, अपनाना पड़ता है क्योंकि 'बीज धरती फाड़कर ही अंकुरित होते सदा।'

(2) 'मन के हारे हार' व्यावहारिक सच हो सकता है लेकिन 'मन के जीते जीत' आसान नहीं होती।

(3) जीवन दर्शन का मर्म है-

हार पर फिर हार पर / फिर हार पर फिर जीत
फलसफा है दिग्विजय से भी / बड़ी उपलब्धि का

इस प्रकार कृति का प्रत्येक छन्द कोई न कोई सीख, शिक्षा, बोध, समझ और संस्कारजनित संवेग, संवेदना देता मन को तरंगित करता दस्तक देता है।

सर्जना प्रकाशन 2/3, बसंत विहार, कोटा-324009 से प्रकाशित 112 पृष्ठों की यह काव्य कृति अमूल्य है।

- डॉ. कहानी भानावत

प्रवासियों के सुरक्षित आवागमन एवं क्वारेंटाइन के लिए पुख्ता व्यवस्था करें : मुख्यमंत्री

जयपुर (सुजस)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रदेश में करीब 10 लाख प्रवासियों एवं श्रमिकों ने अपने गृह स्थान पहुंचने के लिए पंजीयन कराया है। इनमें से करीब 70 प्रतिशत संख्या राजस्थान आने वालों की है। श्रमिकों की इतनी बड़ी संख्या को देखते हुए जिला कलक्टर एवं अन्य अधिकारी उनके सुरक्षित आवागमन और क्वारेंटाइन सहित सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार विशेष ट्रेनों के संचालन के लिए रेलवे के साथ समन्वय कर रही है।

गहलोत वीडियो कांफ्रेंस से कोर ग्रुप, नोडल अधिकारियों एवं जिला कलक्टरों के साथ श्रमिकों के सुरक्षित आवागमन सहित अन्य विषयों पर चर्चा कर रहे थे। उन्होंने कहा कि श्रमिकों की संख्या, उनके गंतव्य स्थान तथा विशेष ट्रेनों के संचालन को अनुमति मिलने की सम्भावना को ध्यान में रखते हुए जिला कलक्टर रेलवे के अधिकारियों के साथ रूट प्लान तैयार करलें। ताकि बिना किसी परेशानी के श्रमिक एवं प्रवासी अपने घर पहुंच सकें। सभी स्थानों पर उनकी स्क्रीनिंग एवं क्वारेंटाइन की पुख्ता व्यवस्था हो।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कोरोना जैसी चुनौती से लड़ने के लिए हमें प्रदेश के हर जिले में हैल्थ इन्फ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करना जरूरी है। राज्य सरकार के प्रयास हैं कि हर जिले में जांच से लेकर उपचार की सुविधाएं उपलब्ध हों। यह हमें आगे भी किसी भी स्थिति से मुकाबला करने के लिए तैयार करेगा। उन्होंने निर्देश दिए कि कोरोना से जंग जीतने के लिए दीर्घकालिक एवं अल्पकालिक दोनों योजनाओं पर काम किया जाए, क्योंकि कोई नहीं कह सकता कि कोरोना से हमें कितनी लंबी लड़ाई लड़नी पड़े।

गहलोत ने कहा कि लॉकडाउन लगाना आसान है, लेकिन उसे हटाना बेहद मुश्किल काम है। लॉकडाउन के साथ-साथ आर्थिक गतिविधियों को भी सुचारू करना हमारे लिए बेहद जरूरी है। अगर सभी गतिविधियां लंबे समय बंद रहीं तो आर्थिक संकट पैदा हो सकता है। ऐसे में कोरोना से लड़ना और मुश्किल भरा हो जाएगा। अधिकारी प्रयास करें कि संक्रमण का फैलाव रोकते हुए आर्थिक गतिविधियों को पटरी पर लाया जा सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि अधिकारी लॉकडाउन के दौरान पास जारी करने की व्यवस्था को सुगम बनाएं। आमजन लंबे समय से चल रहे लॉकडाउन के कारण पहले से ही पीड़ा झेल रहे हैं।

अकाल के अनाज

कहते हैं अकाल के आगे किसी का वश नहीं चलता। जब यह बिगड़ जाता है तो बड़ी मुश्किल से मनता है। राजस्थान में तो काल सदा रूठा ही रूठा रहा है। ऐसा समय भी रहा जब बरसों तक यहां सुकाल नहीं देखा गया। बड़े-बूढ़े कहते भी हैं कि उनके समय में काल देवता की ऐसी नाराजगी पहले कभी देखने में नहीं आई। अब तो जब देखो तब ही अकाल।

महामारी, हैजा, प्लेग जैसी विपदाएं सुकाल नहीं देतीं। आज तो सारे विश्व में कोरोना का भयंकर भय और त्रासदी व्याप्त है। आंकड़े दिल दहला देने वाले हैं। अब पूरा विश्व एक है पर तब ऐसा नहीं था। यहां राजस्थान, मेवाड़ में रहे अकाल की भयावह स्थिति का दस्तावेजीकरण प्रस्तुत है।

अकाल में अनाज और पानी की जबर्दस्त तंगी रहती है। चारे पानी के अभाव में सबसे अधिक मौतें पशुओं की होती हैं। लोकगीतों में भी पानी की बात बार-बार सुनने को मिलती है जिसमें कहा गया है कि घी ढुल जाए तो भले ही ढुल जाए, इससे कुछ नहीं बिगड़ने का परन्तु यदि पानी ढुल गया तो जैसे प्राण ही चला गया- 'घी ढुलै तो म्हारो कछु नहीं बिगड़ै, पाणीड़ो ढुलै तो जीव जाय रे।'

अनाज की समस्या भी यहां कम गम्भीर नहीं है। आदिवासी क्षेत्रों में जहां अकाल की मार सबसे अधिक रहती है, वहां तो यह समस्या और भी विकट और भयावह है।

प्रकृति ने अकाल दिया तो उससे जूझने की शक्ति और तरीके, तौरतरीके और हल भी दिये हैं। कुछ अनाज ही ऐसे दिये हैं जो अकाल का सामना करने और उससे बचाये रखने के द्योतक हैं। इनके लिए न अधिक उपजाऊ भूमि, न खाद, न पानी की जरूरत रहती है। बीज पकने, फसल तैयार होने में भी अधिक समय नहीं लगता। उनका पौधा भी बड़ा नहीं होता। इन्हें चिड़िया तक नहीं खाती। अपेक्षाकृत कम मात्रा में खाने से भूख मिट जाती है और काफी समय बिना खाये रहा जा सकता है। आदमी तृप्त बना रहता है और प्यास भी कम लगती है। इसे पचाने में भी समय लगता है।

ऐसे अनाजों में कुरी, कोदरा, हमराई, बटी, माल मुख्य हैं। कवि नरोत्तमदास ने अपने सुदामा चरित्र में जिस कोदो सवां नामक अनाज का वर्णन किया है वही इधर कोदरा और समराई-हमराई के नाम से जाना जाता है। ये अनाज न सुलते हैं न सड़ते हैं। पचास से लेकर सौ वर्ष तक इनका कुछ नहीं बिगड़ता। इनकी जड़ें भी गहरी नहीं होतीं और जहां कहीं पहाड़ी-ढलान पर भी इनकी फसल ली जा सकती है बल्कि इनके बीजों का छिड़काव कर देने मात्र से भी ये अंकुरित हो उठते हैं।

ये अनाज चिकने या बहुत बारीक होते हैं। छिलकों पर छिलके और परत-दर-परत लिये होते हैं। आठ-आठ परत तक छिलकों की होती है। अन्य अनाजों की तुलना में ये आधे से कम खर्च में होते हैं। पशुओं को यह अनाज हजम नहीं होता है। आदिवासी क्षेत्र उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा के लोगों से पता चला कि कुछ घरों में आज भी यह अनाज काम में लिया जा रहा है। पूछने पर पता चला कि सरकार की ओर से इस अनाज के संरक्षण को कोई महत्व नहीं दिया जा रहा है। अफसरों को तो इसकी जानकारी तक नहीं है। लोगों ने कहा कि सरकार ने गेहूं, मक्का की नई-नई किस्म तैयार की हैं पर ये फसलें पोपल-पापल ही होती हैं। इस अनाज में ठोसपन नहीं है और वैसी मिठास भी नहीं मिलती।

यह भी पता चला कि जब राणा प्रताप ने घास की रोटी खाई वे दिन भी अकाल के ही थे। पर वह घास नहीं थी। दरअसल यही अनाज बटी था। इन अनाजों का पौधा घास जैसा ही होता है। इनकी बनी रोटी प्याज, मिर्ची, भाजी के साथ खाई जाती है। यदि इनमें से कुछ न मिले तो पानी के साथ भी यह रोटी खाई जा सकती है।

मरूस्थलीय इलाकों में भूरट नामक घास अनाज के रूप में काम में ली जाती है। डॉ. केसरीमल 'केसरी' के अनुसार बाजरे के सिट्टे की तरह इसमें भी सिट्टा लगता है जो कांटेदार चुभनेवाला होता है। इसमें हल्के पीले रंग के बीज इसबगोल के दानों की तरह होते हैं। बाजरे के आटे में समान अनुपात में मिलाकर इसकी रोटियां बनाकर खाया जाता है। अकाल से मुकाबला करने में जंगल के कंद मूल, फल, फूल भी बड़े सहायक रहे हैं। ऐसे-ऐसे जमीकंद मिलते हैं जिनके खाने से सप्ताह, दो-दो सप्ताह तक भूख नहीं लगती परन्तु जंगलों के विनाश ने यह सामग्री भी उजाड़ दी है। महुआ तो आदिवासियों का प्राण रहा है।

इसकी कोई चीज ऐसी नहीं जिसे आदिवासी काम में न लेते हों। फल फूल छाल लकड़ी सबकुछ बड़ी उपयोगी है। बनों के नष्ट होने से जड़ी-बूटियों की मूल्यवान सम्पदा से हम हाथ धो बैठे। यह सारी संस्कृति समाप्तप्राय हो गई। वह समय दूर नहीं है जब इनकी पहचान और नाम भी हमारे लिए शोध और अनुसंधान तक की पकड़ से परे हो जायेंगे।

अकाल हो चाहे महाअकाल, कितनी ही परेशानी हो परन्तु ग्रामीणजन अपना रंजन कभी नहीं छोड़ेंगे बल्कि गाने में उसकी पीड़ा-व्यथा प्रकट कर हल्के ही होंगे। इस प्रकार का साहित्य तत्कालीन परिस्थिति का जीवन्त चित्रण करता है और सामाजिक परिस्थितियों का ऐतिहासिक दस्तावेज बनता है।

इधर अकाल तो पड़ता ही रहता है पर दो अकाल अभी भी याद किये जा रहे हैं। पहला संवत् 1896 का तथा दूसरा संवत् 1956 का है। उदयपुर के गांवांचलों में आज भी इन अकालों की गूंज गीतों में अधिक गहराती सुनने को मिलती है। ऐसे समय में ये गीत फिर से अधिक गाये जा रहे हैं जबकि इधर भारी अकाल पड़ा हुआ है। कड़ावा है-

छनवा थारे माथे बीजुरी जो पड़जो
बाजरा री बारे रोटी ने गवां री रोटी तेरा
जेठजी तो जीमण बैठा लूट्या तंबू डेरा

अर्थात् - हे छनवा! तुम्हारे ऊपर बीजली पड़े। बाजरे की बारह और गेहूं की तेरह रोटी बनाई। जेठजी जीमने बैठे तो तंबू डेरे भी लूट ले गये।

छप्पन के अकाल का वर्णन तो कई रूपों में सुनने को मिलता है। एक गीत इस प्रकार है-

पड़ती सानो सपना रे
दुखिया राजा
नगरा खूटौ सारो रे /
नदियां टूटा नीरा रे
खांणा टूटा नीरा रे /
लखमी मरवे लागी रे
धान खूटा कोठारा रे /
खाई वे खूटी मक्की रे
दुनिया उठवा लागी रे

अर्थात् - हे राजा! छप्पन के साल घोर अकाल पड़ा। सारा नगर उजड़ गया है। नदी का पानी सूख गया है। महूड़े का खाना भी खत्म हो गया है। मवेशी मरने लगे हैं। कोठों में भरा धान खत्म हो गया है। मक्की भी खाते-खाते खत्म हो गई है। आदमी मरने लग गये हैं।

ये गीत इस अकाल में भी चल रहे हैं पर साथ-साथ पंक्तियां वर्तमान स्थिति की भी जानकारी दे रही हैं-

अन्दर जमी रूठी ने जंगल रूठिया
मंगर्‌या भाटा तपिया पंखी उजड्‌या
पाणी विन वाणी बंधरी वाछरू
ढांढा चोपाया जीणो छोड़ियो
हेंड़ांपंपा में पाणी सूखियो
कालो जो काल अकाल रो

अर्थात् - धरती जंगल सब रूठ गये हैं। मगरों के पत्थर तप रहे हैं। पक्षी उजड़ गये हैं। पानी के बिना बछड़ों का बिंबियाना तक बन्द हो गया है। हेंडपंपों का पानी भी सूख गया है। अकाल का काल काला हुआ जा रहा है।

वर्षा की कमी होने के कारण राजस्थान में निरन्तर अकाल पड़ते रहे हैं। यह क्रम सदियों से जारी है। अकाल के सम्बन्ध में यह कहावत यहां के लोगों के मुख पर सुनने को मिल जाती है जिसमें प्रति तीसरे वर्ष आधा अकाल तथा आठवें वर्ष पूरा अकाल पड़ना कहा गया है- 'तीजो कुरियो आठमो काल।'

कहा जाता है कि ग्यारहवीं शताब्दी में एक ऐसा भीषण अकाल पड़ा जो लगातार बारह वर्ष तक चला तब पानी ही नहीं बरसा। तेरहवीं शताब्दी में सन् 48 तथा 92, पन्द्रहवीं शताब्दी में सन् 42, सौलहवीं शताब्दी में सन् 34-35 एवं 70, सत्रहवीं शताब्दी में सन् 51, 52, 53 व 60 तथा अठारवीं शताब्दी में सन् 53 तथा 68 एवं उन्नीसवीं शताब्दी में तो सन् 1900, 1901, 1905, 1908, 1917, 1925, 1934, 1948, 1952, 1965-66, 1987 वर्ष भयंकर अकाल के रहे। सन् 1900 तथा 1901 के अकाल की भयावह स्थिति में तो 10 लाख व्यक्ति काल कवलित हो गये।

कोरोना का प्रभाव पूरे विश्व में लगातार बढ़ता जा रहा है। बड़े-बड़े राष्ट्र कहे जाने वाले भी इस महामारी से परेशान, घोर चिंतित और जनहानि से लाइलाज हैं। ऐसे में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की भूमिका सर्वत्र पूरे विश्व में प्रशंसनीय, अनुकरणीय और आदर्श कही जा रही है।

कहा तो यहां तक जा रहा है कि अकेला और एकमात्र भारत ही है जिसने बड़े धैर्य, आत्मविश्वास और अनुशासन के साथ इस वैश्विक संकट की चुनौती का मुकाबला करने में सफलता हांसिल की है। यह भारत की ही विशेषता है कि यहां पर्याप्त व्यवस्था के उपरान्त इस कठिन दौर में बाहरी राष्ट्रों के लिए भी बनती कोशिश कोरोना रोकने में मददगार बना हुआ है।

(लोककलाओं का आजादीकरण से)

कुछ पुराने पन्ने

-प्रेमलता पिंकी वैष्णव-

चित्तौड़गढ़ में जन्मी पिंकी वैष्णव की शिक्षा उदयपुर में हुई। हिन्दी में पीएच.डी. उदयपुर से की। पिछले एक दशक से अमेरिका में हिन्दी भाषा शिक्षण से जुड़ी हुई है।

कुछ पुराने पन्नों को पलटा तो यादें निकलीं।
थोड़ा और खरखराया तो बातें निकलीं।।
एक पन्ना और उतरी तो, नोंकझोंक की तस्वीरें उभरीं।
वहीं बगल में बैठी थी गुड्डी, लाल जोड़े में सजी सँवरी।।
कोने में झाँका और पाया, कनखियों को दुबका।
पापा के कहने पर जब चाची ने दिया अपना झुमका।।

वो बुझे चेहरे भी बाहर आने को मरते थे।
जिनसे हम कभी मस्ती मज़ाक़ किया करते थे।।
बिजली के खम्भे के नीचे कुछ इशारे खड़े थे।
खुली-खुली आँखों में खुशी के मोती जड़े थे।।
छुपे-छुपे से अधसूखे कपड़ों के तारों में।
देखा, अब तक वादे वहीं पड़े हैं क़तारों में।।
छत की मुँडेर से शादी के गीत उतरे धीरे-धीरे।
शीशे की गोलाई में दिखे पीछे बजते मंजीरे।।
काती की ठिठुराती सुबहों में नदी पर जाने की रीत।
प्रभात फेरियों की लय और पथवारी के गीत।।
बहुत कुछ समेटे हैं खुद में ये पुराने पन्ने।
कहीं हरे पूरे खड़े तो कहीं चूसे हुए गन्ने।।
कहीं-कहीं मोहल्ले में काँच के चिलके भी दिखते थे।
करूँदे और खजूर चलनी भर मक्की में बिकते थे।।
माँ जब निकाल लेती थी अपनी चाय सबसे पहले।
भाई बहनों के खेल में छुपे इक्के दहले नहले।।
भरी गरमी की शामों में छत पर कौन छींटे पानी।
पूरा दिन समझाया करती थी बेचारी बूढ़ी नानी।।
एक पन्ने पर दिखे महादेवी और उनका घीसा।
वो मंदिर भी है जहाँ मामा ने चंदन पीसा।।
इन पन्नों में शब्द खेलते हैं मेरी ज़िंदगी का खेल।
दिवाली की छुट्टी का सफ़र, कभी ताँगे, कभी रेल।।
बाक़ी हैं इन पन्नों की सीढ़ियाँ और अभी।
चली आऊँगी इधर चलते चलते कभी।।
आज बस यादों को इतना ही सहलाना है।
कल की यादें बनाने मुझे आज अभी जाना है।।

चलाचल

-शासनश्री मुनि सुखलाल-

पीपल का एक जीर्ण पत्ता
धीरे से लरज कर गिर पड़ा धरती पर।
हवा का एक हलका सा झोंका तो आया था,
पर वह तो बहाना मात्र था।
असल में तो डाली ने ही उसे धक्का दिया था।
हवाएं तो उस दिन भी बहुत तेज थीं
जिस दिन ताम्रांकुर के रूप में इसने
अपनी पूरी टीम के साथ
डाली पर जमाया था अपना डेरा।
हवा ने उसे दुलराया
फुनगी ने उसे मुकुट बनाया
जमीन से पानी पिलाया
सूर्य ने ऊर्जा प्रदान की।
धीरे-धीरे ताम्रता हरीतिम हुई,
यौवन लहराया,
प्रौढ़ता जागी
पत्ता बोझिल होगया
उसके पैर लड़खड़ा गये।
जन्म और मृत्यु का यह चलाचल खेल
इसी तरह चलता रहा है, चलता रहेगा।

कोरोना के नाम सारी दौलत दान कर दी महंतजी ने

उदयपुर (विज्ञप्ति)। अपना जीवन भगवान के चरणों में अर्पित करने वाले एक साधु महाराज ने लाजवाब मिसाल पेश की है। अपनी सारी दौलत कोरोना के नाम

कर अपनी जमा पाई-पाई से जरूरतमंदों के लिए राशन खरीद डाला।

वे चाहते हैं कि कोई भूखा ना सोए। उदयपुर जिले के चावंड में रहने वाले महंत घनश्याम बावजी का पुरातन जागनाथ मंदिर में डेरा है। वे कहते हैं कि भक्तों से ही चढ़ावे और दक्षिणा के रूप में प्राप्त जमा पूंजी को राशन के रूप में उन्हीं को समर्पित कर रहा हूं।

महंत घनश्याम बावजी ने 15-15 दिन राशन के एक हजार पैकेट जरूरतमंदों को देने के लिए तैयार किए हैं जो विप्र फाउंडेशन की ओर से जरूरतमंदों को वितरित किए गए। घनश्यामजी के पास भक्तों की दी हुई एक गाड़ी भी है। कोई खरीदने वाला हो तो उससे प्राप्त राशि भी वे इस पुण्य कार्य में लगाना चाहेंगे।

कोरोना के दौरान गर्भवती महिलाएं बरतें अधिक सावधानी : डॉ. कौशिक

उदयपुर (विज्ञप्ति)। पारस जे. के. हॉस्पिटल की स्त्री एवं प्रसूती रोग विशेषज्ञ डॉ. शीतल कौशिक ने गर्भवती महिलाओं व कोरोना के बारे में बात करते हुए बताया कि गर्भवती महिलाओं को कोरोना से बचाव के लिए पूर्ण सावधानी बरतनी चाहिये। डॉ. कौशिक ने बताया कि सोश्यल डिस्टेसिंग रखते हुए बार-बार हाथ धोना एवं घर से बाहर नहीं निकलना तो सभी के लिए बहुत जरुरी है लेकिन ऐसी महिलायें जो गर्भवती हैं उन्हें अपने आहार का पूर्णरुप से ध्यान रखना चाहिये क्योंकि इस दौरान हुआ संक्रमण बहुत घातक होता है।

डॉ. कौशिक ने बताया कि इससे बचने के लिए महिलाओं को रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले आहार लेने चाहिये जो कि विटामिन सी से मिलते हैं। बाकी रुटीन में आयरन व कैल्शियम की दवाओं का सेवन उसी प्रकार करना चाहिये जैसे साधारण गर्भवती करती है। फिर भी यदि महिला को संक्रमण हो जाता है तो उसकी आपातकालीन डीलिवरी करके जान बचाई जाती है। घर में कोई खांसी जुकाम का मरीज हो तो गर्भवतियों को उससे दूर रहना चाहिये। डॉ. कौशिक ने कहा कि किसी भी प्रकार की समस्या होने पर घबराना नहीं चाहिये, तुरंत अस्पताल पहुंच चिकित्सक को दिखाना चाहिये। इस समय अस्पताल 24 घंटे खुले रहकर जन सेवा के लिए कटिबद्ध हैं। सभी चिकित्सक समाज को कोरोना से बचाने के लिए रात-दिन काम कर रहे हैं।

एचडीएफसी बैंक का शुद्ध लाभ 18 प्रतिशत बढ़ा

उदयपुर (विज्ञप्ति)। मार्च, 2020 को समाप्त हुई तिमाही के लिए एचडीएफसी बैंक की कुल आय 21,236.6 करोड़ रु. थी, जो पिछले साल की इसी तिमाही के मुकाबले 18.2 प्रतिशत ज्यादा थी। 31 मार्च, 2020 को समाप्त हुई तिमाही के लिए कुल ब्याज आय (अर्जित ब्याज में से खर्च किया गया ब्याज हटाकर) 15,204.1 करोड़ रु. हो गई, जो 31 मार्च, 2019 को समाप्त हुई तिमाही के लिए 13,089.5 करोड़ रु. थी।

यह एडवांस में 21.3 प्रतिशत तथा डिपॉज़िट में 24.3 प्रतिशत की वृद्धि के चलते थी। तिमाही के लिए कुल ब्याज मार्जिन 4.3 प्रतिशत था। 31 मार्च, 2020 को समाप्त हुई तिमाही के लिए ऑपरेटिंग खर्च 8277.8 करोड़ रु. थे, जो पिछले साल की इसी तिमाही के दौरान 7117.1 करोड़ रु. के मुकाबले 16.3 प्रतिशत ज्यादा थे।

इस तिमाही के लिए लागत से आय का अनुपात 39 प्रतिशत था, जो 31 मार्च, 2019 को समाप्त हुई इसी तिमाही के लिए 39.6 प्रतिशत था। 12958.8 करोड़ रु. का प्रि-प्रोविज़न ऑपरेटिंग प्रॉफिट (पीपीओपी) पिछले साल की इसी तिमाही के मुकाबले 19.5 प्रतिशत बढ़ा।

वेदांता द्वारा 10 करोड़ की सहायता

उदयपुर (विज्ञप्ति)। वेदांता समूह द्वारा कोविड-19 के खिलाफ सहयोग में जरूरतमंद लोगो को निवारक स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने और दैनिक मजदूरी श्रमिकों को मुफ्त भोजन वितरित करने पर 151 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं। साथ ही वेदांता ने महामारी फैलने से रोकने के लिए अब तक 7 लाख से अधिक लोगों को लाभान्वित किया हैं।

अध्यक्ष अनिल अग्रवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को कार्पोरेट सेक्टर का पूरा समर्थन है। वेदांता द्वारा दैनिक श्रमिकों, निवारक स्वास्थ्य देखभाल के लिए कर्मचारियों और अनुबंध भागीदारों के कल्याण हेतु 100 करोड़ रुपये का कोष स्थापित किया गया है। कंपनी द्वारा अब तक देश भर में दैनिक वेतनभोगियों को 5.5 लाख से अधिक भोजन उपलब्ध कराने के साथ ही, मुंबई के वर्ली कोलीवाड़ा में 13,500 मछुआरों को सूखा राशन प्रदान किया जा रहा है। वेदांता की व्यावसायिक इकाइयों ने स्थानीय समुदायों को 21,000 से अधिक सूखे राशन पैकेट वितरण करने के साथ ही वेदांता फाउंडेशन ने मुंबई के अभिनव कुष्ठ विद्यालय में लगभग 850 लाभार्थियों सहित 300 परिवारों को खाद्यान्न वितरित किया है। दिल्ली, मुंबई और पटना में 10 लाख भोजन पैकेट देने का वादा किया है। निरीह पशुओं को ध्यान में रखते हुए कंपनी प्रतिदिन 50,000 से अधिक घुमंतु पशुओं को आहार सुलभ करा रही है। अब तक दिल्ली, मुंबई, जयपुर और पुणे में 6.6 लाख से अधिक घुमंतु पशुओं को आहार उपलब्ध कराया है।

वेदांता ने एहतियाती कदम उठाते हुए लोगो को 2.5 लाख से अधिक मास्क वितरित किए हैं। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार को एक और 2 लाख एन 95 मास्क उपलब्ध करा रही है। जिला अस्पतालों को 26 हजार से अधिक सर्जिकल मास्क और 60 हजार से अधिक सर्जिकल दस्ताने प्रदान किए हैं। 75 हजार से अधिक साबुन और सैनिटाइजर वितरित किये हैं।

बाल्को चिकित्सालय में आइसोलेशन वार्ड स्थापित करने के साथ ही कोरबा में 100 बिस्तरों वाले अस्पताल की स्थापना की गई है। जोधपुर में केयर्न सेंटर ऑफ एक्सीलेंस को 120-बेड क्षमता के साथ क्वारेंटाइन सुविधा के रूप में जिला प्रशासन को सौंप दिया गया है, जिसमें 150 लोगों के लिए दिन में तीन बार भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है।

कोरोना के खिलाफ लड़ाई हर भारतीय की भी : सहाराश्री

उदयपुर (विज्ञप्ति)। सहारा इंडिया परिवार के मैनेजिंग वर्कर एवं चेयरमैन सहाराश्री सुब्रत रॉय

सहारा ने कहा कि कोरोना के विरूद्ध लड़ाई सिर्फ सरकार की नहीं है बल्कि सब भारतीयों को एकजुट होकर इस महामारी को हराने में बराबर से अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। सबको यह समझना होगा कि कोरोना के विरूद्ध यह लड़ाई संपूर्ण मनुष्य जाति की है। मनुष्य जाति के हर सदस्य की लड़ाई है। इस लड़ाई में हर व्यक्ति सिपाही है। हर व्यक्ति की कोई न कोई जिम्मेदारी और महत्वपूर्ण भूमिका है।

उन्होंने कहा कि अगर हम सब यह मान लेंगे कि जो कुछ करना है वह सरकार को करना है, अस्पतालों और डॉक्टरों को करना है, पुलिस और प्रशासन को करना है, तो यकीन मानिए हम कोरोना के विरूद्ध लड़ाई हार जाएंगे। अगर हमें कोरोना को हराना है तो स्वयं को एक सिपाही मानना होगा। हम जहां भी हैं और जैसे भी हैं, वहीं अपनी भूमिका निभानी होगी।

यह बेहद कठिन दौर है। इंसान खतरे में है, इंसानियत खतरे में है। उन्होंने सभी से अपील की कि कोरोना के खतरे को समझें। चाहे कोई भी धर्म हो, सम्प्रदाय हो, मजहब हो, सबको इनसे ऊपर उठने की जरूरत है। इस समय हम सबका मजहब इंसानियत ही होना चाहिए।

नारायण सेवा द्वारा भोजन सेवा

उदयपुर (विज्ञप्ति)। नारायण सेवा संस्थान द्वारा गरीब, मजदूर और जरूरतमन्द जनों में भोजन, राशन वितरण और सेवा पहुंचाने का क्रम निरन्तर जारी है। संस्थान संस्थापक कैलाश मानव तथा अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने

बताया कि लॉक डाउन के एक माह में गरीबों में 48900 भोजन पैकेट, 1080 राशन किट और 26700 फेस मास्क तथा 400 पीपीई किट भी बनाये गए हैं। सेवादूत के रूप में कुलदीपसिंह, सुंदर वैष्णव, पवन शर्मा, शीतल, सुकान्त और राजेंद्र ने सेवाएं दीं।

300 लोगों को प्रतिदिन भोजन की सेवा

उदयपुर (विज्ञप्ति)। स्व. काशीराम मेघवाल की स्मृति में उनके परिजनों द्वारा पिछले 23 मार्च से प्रतिदिन सुबह-शाम जरूरतमंद लोगों को भोजन कराने का कार्य किया जा रहा है। समाजसेवी राजकुमार मेघवाल ने

बताया कि उनके दादा काशीराम मेघवाल का स्वर्गवास 9 फरवरी को हुआ था। समाज में मृत्युभोज बंद है। इसलिए उनकी स्मृति में मेरे पिताजी एवं तीन चाचाओं ने महामारी के इस मुश्किल समय में जरूरतमंद लोगों को भोजन कराने का निर्णय लिया। 23 मार्च से पूरा परिवार भोजन बनाने और जरूरतमंद लोगों को सुबह- शाम भोजन वितरित करने में लगा हुआ है। इसके अलावा कोरोना वॉरियर्स को सुबह नाश्ता भी दिया जा रहा है। इसमें खूबीलाल, गणेशलाल, नटवरलाल, पप्पूलाल, सकुबाई, उषाबाई, हीराबाई, पुष्पाबाई, लवकुमार, कुशकुमार, आशीष, वीरेंद्र, रेखा, हेमा, भावना, रंजना एवं पड़ोसी मुकेश श्रीमाली जुटे हुए हैं।

कोरोना से कट

कोरोना संकट के दौरान घर पर रह रही डॉ. कहानी भानावत द्वारा बनाई गई पेंटिंग। डॉ. कहानी स्थानीय मीरां गर्ल्स कॉलेज में ड्राइंग एण्ड पेंटिंग की एसोसिएट प्रोफेसर हैं।

कोरोना के चलते लोकडाउन में स्वतंत्र नहीं होने पर पिता-पुत्र डॉ. तुक्तक एवं शब्दांक भानावत ने अपने बाल-जाल से मुक्ति ले ली।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(Shabd Ranjan, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

वेदांता द्वारा 15,000 पीपीई किट का उत्पादन

उदयपुर (विज्ञप्ति)। कोराना कर्मयोद्धाओं के रूप में सेवा देने वाले चिकित्साकर्मियों एवं चिकित्सकों के सहयोग के लिए विश्व की प्रमुख तेल, गैस एवं धातु उत्पादन कंपनी वेदांता लि. गुरूग्राम में बडे पैमाने पर व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण के रूप में पीपीई का उत्पादन किया जा रहा है। कंपनी ने हाल ही में केंद्रीय वस्त्र मंत्रालय के सहयोग से 23 पीपीई मशीनों का आयात किया है, और अधिकृत परिधान निर्माताओं के साथ मिलकर 5000 से अधिक पीपीई प्रति उत्पादन सुनिश्चित किया है।

वेदांता के अध्यक्ष अनिल अग्रवाल ने कहा कि पीपीई चिकित्सा कर्मियों के लिए सुरक्षा का महत्वपूर्ण संसाधन है और अन्य देशों की तरह भारत में भी स्वास्थ्य कर्मचारियों की सुरक्षा के लिए पीपीई उपलब्ध कराने के लिए अथक प्रयास किए जा रहे हैं। वेदांता ने अब तक लगभग 15,000 पीपीई का उत्पादन किया है। कंपनी द्वारा व्यावसायिक इकाईयों के माध्यम से 3.5 लाख से अधिक मास्क प्रदान किए हैं और स्वास्थ्य मंत्रालय को 2 लाख एन 95 मास्क उपलब्ध कराएं हैं।

इस सहयोग के लिए वस्त्र मंत्रालय के प्रधान सचिव, रवि कपूर ने वेदांता समूह का आभार प्रकट करते हुए कहा कि एईपीसी को पीपीई के निर्माण के लिए कंपनी ने आवश्यक मशीनरी मुहैया कराकर अनुकरणीय कार्य किया है जो कि वर्तमान समय में अग्रिम पंक्ति के चिकित्साकर्मियों एवं चिकित्सकों के लिए आवश्यक है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि आगामी समय में भी वेदांता इसी प्रकार अग्रणी भूमिका निभाएगा।

लक्ष्यराज कालरा द्वारा कोरोना पर विशेष ई-बुक

उदयपुर (विज्ञप्ति)। कोविड-19 से जूझ रही दुनिया इस समय लॉकडाउन में है। सबकी यही चिंताएं हैं कि कोरोना वायरस से कब छुटकारा मिलेगा? आने वाले दिनों या वर्षों में और क्या-क्या होगा? या देखने को मिलेगा? भविष्य के ऐसे ही कई सवालों को समेटने का काम ई-बुक में किया है उदयपुर के प्रतिभाशाली छात्र लक्ष्यराज कालरा ने। एमएमपीएस दसवीं कक्षा के इस युवा विद्यार्थी ने कोविड-19 के प्रकोप से लेकर आज तक के बिगड़े और संभले हालात को लेकर गहराई से काम किया है।

शहर के शक्तिनगर निवासी लक्ष्य ने बताया कि मैंने अपनी ई-बुक में कोरोना वायरस के इतिहास, उसके प्रकार, नए वायरस नोवेल, कोविड-19 सुरक्षा, इम्यूनिटी, विभिन्न देशों में स्थिति, सरकारों के किए प्रयासों, लॉकडाउन, क्वारेंटाइन, कर्फ्यू जैसे सभी विषयों को संकलित करने का काम किया है। भविष्य में जब कोरोना का नाम गुमनामी के अंधेरे में होगा या तब लोग इसको भुला चुके होंगे, उस स्थिति में मेरी डिजिटल निर्देशिका कोविड-19 के अतीत से पर्दा उठाने का काम करेगी। ई-बुक में मैंने सभी विश्वसनीय न्यूज पोर्टल्स और समाचारपत्रों के संदर्भ लिए हैं, जिससे कि किसी तरह के कोई सवाल खड़े नहीं हों। इसे मैंने देश के कर्मवीरों और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को समर्पित किया है। ई-बुक में शहर के प्रबुद्धजनों डॉ. अरविंदर सिंह, शैलेन्द्र सोमानी, डॉ. मनीषा वाजपेयी आदि विशेषज्ञों ने भी मार्गदर्शन किया है। लक्ष्य के पिता और आईटी गुरुकुल के हेड संतोष कालरा ने बताया कि ऐसा नहीं कि ई-लॉचिंग के बाद इस बुक का काम पूरा हो जाएगा। आने वाले दिनों में भी कोविड-19 को लेकर जो कुछ अपडेशन देश-दुनिया में आएगा, उसकी समग्र जानकारी यहां पर ताजा तथ्यों के साथ मिलती रहेगी। सूचना-तकनीक के सभी पहलुओं का समावेश इसमें किया गया है। महामारी कानून की महत्वपूर्ण धाराओं के साथ सामान्य सवालों और भ्रांतियों का निराकरण भी किया है।

ई-बुक की कॉ-ऑथर और लक्ष्य की मम्मी नीलम ने बताया, ई-बुक में उन सभी कर्मवीरों के प्रयासों को भी सराहा गया है जो कोरोना से जंग में हमारे मददगार बने हैं। विभिन्न डॉक्टर्स, एडमिनिस्ट्रेशन और सामाजिक संस्थाओं के किए जा रहे सेवा कार्यों को शामिल किया गया है। डब्ल्यूएचओ और सभी सरकारों की कोशिशों को प्रमुखता से रखा गया है। कोरोना से संक्रमित हुई हस्तियों राष्ट्राध्यक्षों, वैज्ञानिकों, खिलाड़ियों, अभिनेताओं के अनुभवों को भी जोड़ा गया है।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की 100 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से कुछ तो अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/-
जैन लोक का पारदर्शी मन	150/
गवरी	60/
राजस्थान के थापे	150/
कठपुतली	60/
जनजातियों में गाथा गायकी	350/

इतिहासकार डॉ. द्वारकालाल माथुर का निधन

उदयपुर (विज्ञप्ति)। राजस्थान राज्य अभिलेखागार के पूर्व निदेशक एवं वरिष्ठ इतिहासकार डॉ. द्वारकालाल माथुर का गत दिनों निधन हो गया। उनके निधन पर इतिहासकार प्रो. गिरीशनाथ माथुर, डॉ. भानु कपिल, डॉ. मनोहरसिंह राणावत, डॉ. जमनेशकुमार ओझा, डॉ. राजेंद्रनाथ पुरोहित, डॉ. गोविन्दलाल मेनारिया, डॉ. मोहब्बतसिंह राठौड़, डॉ. प्रियदर्शी ओझा, डॉ. मनोज भटनागर, डॉ. जीवन खरगवाल, डॉ. हेमेंद्र चौधरी, डॉ. के एस गुप्ता, डॉ. कैलाश जोशी, जयकिशन चौबे, इन्दरसिंह राणावत, डॉ. एस.एस चौधरी, डॉ. श्रीनिवास माहवार, डॉ. कुलशेखर व्यास, हरिशंकर पुरोहित एवं शिरीषनाथ माथुर ने गहरा शोक व्यक्त किया।

करेंसीमेन विनय भाणावत की पत्नी आशा भाणावत का निधन

उदयपुर (विज्ञप्ति)। करेंसीमेन और डाक टिकिट संग्रहण के वर्ल्ड रिकॉर्डधारी विनय भाणावत की धर्मपत्नी आशा भाणावत का गत दिनों निधन हो गया। साठ वर्षीय श्रीमती भाणावत पिछले लंबे समय से किडनी की बीमारी से ग्रसित थी। पिछले तीन महीनों से उनका इलाज अहमदाबाद में चल रहा था। वे अपने पीछे एक पुत्र और दो पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। कोरोना महामारी के चलते परिवार के सीमित सदस्यों ने उनका अशोकनगर मोक्षधाम पर अंतिम संस्कार किया।

उल्लेखनीय है कि श्रीमती भाणावत अपने पति के करेंसी कलेक्शन में पूरा सहयोग करती थी। विनय भाणावत को मिले अवार्डों में उनकी पत्नी की मुख्य भूमिका रही है।

'हम हार नहीं मानेंगे' गीत की पेशकश

उदयपुर (विज्ञप्ति)। एचडीएफसी बैंक ने गीत 'हम हार नहीं मानेंगे' रिलीज किया है। यह गीत भारत और करोड़ों भारतीयों के अदम्य उत्साह को सम्मान देता है, जो कोविड-19 महामारी से लड़ने के लिये एकजुट हैं।

इस गीत को ऑस्कर और ग्रैमी अवार्ड विजेता संगीतकार ए. आर. रहमान ने कम्पोज किया है और इसके बोल मशहूर गीतकार और कवि प्रसून जोशी ने लिखे हैं। इस गीत में भारत भर के संगीतकारों को भी साथ लाया गया है। इसके कलाकारों में चर्चित नाम शामिल हैं, जैसे क्लिंटन सेरेजो, मोहित चौहान, हर्षदीप कौर, मीका सिंह, जोनिता गांधी, नीति मोहन, जावेद अली, सिड श्रीराम, श्रुति हसन, शाशा तिरूपति, खातिजा रहमान और अभय जोधपुरकर। भारत के अग्रणी तालवादक शिवमणि, सितार वादक असद खान और बेस में माहिर मोहिनी डे भी इस प्रोजेक्ट का हिस्सा हैं। इस गीत के माध्यम से, एचडीएफसी बैंक अधिक से अधिक लोगों को पीएम-केयर्स फंड में दान देने के लिये प्रोत्साहित करते हुए देश के प्रति अपनी निष्ठा और सहयोग दर्शाना चाहता है।

विवाह के विविध संस्कार एवं रीति प्रसंग

मर्यादित, सुखद, सम्पन्न एवं सुव्यवस्थित जीवन जीने के लिए उसे सौलह संस्कारों में विभक्त किया गया है। इनमें तीन जन्म, विवाह और मृत्यु संस्कार तो अति ही महत्वपूर्ण हैं। विवाह गृहस्थ जीवन के लिए आवश्यक माना गया है। इसी से जीवन की पूर्णता मानी गई है और इसी में रहकर मानव धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि प्राप्त कर सकता है।

विवाह जीवन का अटूट बंधन है। नर-नारी के मिलन से ही कुटुम्ब-परिवार-समाज की संकल्पना सार्थक होती है। वही विवाह विधेय कहा गया है जिसका कुल शील विद्या धन शरीर वय एवं व्यक्तित्व समान हो। जैसे गाड़ी दो पहियों से ही संतुलित-संचालित होती है वैसे ही नर और नारी से ही गृहस्थ की गाड़ी संचालित, संतुलित एवं अनुशासित होती है। इसके लिए दोनों का एक-दूसरे के साथ घनिष्ट सहयोग, सुख-दुख में समान भागीदारी, त्याग, समर्पण, सौहार्द, सहचर्य, सहकर्म जरूरी है।

मोटे रूप में विवाह के आर्य और अनार्य दो प्रकार हैं। अनार्य को पाप विवाह कहा गया है। दोनों के चार-चार भेद हैं। आर्य विवाह के ब्रह्म, प्राजापत्य, आर्ष एवं दैवत तथा अनार्य के गांधर्व, आसुर, राक्षस और पेशाच हैं। पाप विवाह नियम विपरीत स्वेच्छाचारी, उच्छृंखलतापूर्ण तथा वासनामय होने से घृणित ही माने गये हैं।

लोकजन में विवाह का सर्वतोभावेन महत्व माना गया है। इसी से वंश वृद्धि होती है और कुटुम्ब कबीले जाति संघ संप्रदाय में बंधकर मनुष्य अपने को सुखी सुरक्षित समतावान तथा सफल जीवन का धारक मानता हुआ वर्तमान ही नहीं, मृत्युपरांत के भावी जीवन को भी सफल कर संतोषी बनता है।

देश की लगभग सभी जातियों में विवाह को उत्सव विशेष के रूप में आयोजित करने की परंपरा एवं प्रथा है। कई जातियों में बड़ी विचित्र प्रथाएं मिलती हैं। इतने विविध प्रकार भी मिलते हैं कि चकित रह जाना पड़ता है। विवाह मनुष्यों में तो होते ही हैं पर मानव ने पशु, पक्षियों, पेड़, पौधों और वनस्पतियों के विवाह रचाने में भी कोई कसर नहीं रखी। यह भारत देश ही है जहां विवाह के कई रूप, कई विधियां, कई रीतियां, नेगचार के प्रसंग और ठाठ ठसक देखने को मिलते हैं।

यहां लोकजीवन में व्याप्त विवाह के विविध संस्कारों, रीति प्रसंगों तथा नेगचारों की बानगी दी जा रही है। बदलते परिवेश में शाही शादियों के ठाठ ही हमारी कल्पना से बाहर हो गये हैं। होड़ाहोड़ी में नित नये ऐसे विवाह होने लग गये हैं जो पहले कभी नहीं हुए। ऐसे विवाह भी हैं जो गिनीज बुक में दर्ज होकर चर्चित बने रहना चाहते हैं।

यहां जो लोकव्याप्त प्रसंग, रीतिरस्म दिये जा रहे हैं वे राजस्थान के मेवाड़ अंचल में अधिव्याप्त हैं। समय के बदलाव के साथ उनमें भी कई बदलाव आ रहे हैं। लगता है, यह बदलाव ही ऐसा हो जायेगा कि पुराने पारंपरिक रीतिरिवाजों की जानकारी ही दुर्लभ एवं दूभर हो जायेगी।

विवाह के जिन रीति-प्रसंगों से मैं स्वयं गुजरा, अब उनमें से आधे भी नहीं रहे हैं। कुछ बचे हुए हैं वे भी केवल निभाने के अवशेषवत हैं। उनके साथ विवाहोत्सव का वह उल्लसित मन देखने को नहीं मिलता। जो भी हो, यहां जो प्रसंग दिये जा रहे हैं वे तत्कालीन समाज के परिवेश, रहन-सहन की जीवनधर्मिता, उत्सव समारोह की पावन पद्धति और उससे जुड़ी समूहबद्धता का सौहार्द तो व्यक्त करते ही हैं।

(1) कुंकुम् पत्रिका भेजना :

विवाह में संबंधियों, रिश्तेदारों तथा अन्य परिचितों को बुलाने के लिए निमंत्रण के रूप में कुंकुम् पत्रिका लिखी जाती है जिसे 'कांकोपतरी' अथवा 'कंकोतरी' कहते हैं। प्रारंभ में ये पत्रिकाएं साधारण हल्के गुलाबी कागज पर काली स्याही से लिखी जाती थीं जिनका अपना विशेष मजमून होता था। लिखने के पश्चात अंगुलियों की सहायता से कागज पर कंकू छांट दिया जाता था फिर उसे बीड़कर (मोड़कर) लच्छा बांध दिया जाता था। वर्तमान में कई प्रकार की कुंकुम् पत्रिकाएं देखने को मिलती हैं। कुंकुम् पत्रिका का मजमून इस प्रकार रहता था-

''सिधश्री (जहां भेजनी है) शुभ सुथानेक सरव ओपमा सदा विराजमान अनेक ओपमा लायक शाहजी सा. श्री (जिसे भेजी जानी है उसका नाम) चरण (पुत्र का नाम) ऐतान लिखी (भेजे जाने वाले स्थान का नाम) चरण (पुत्र का नाम) का जुवार बंचावसी। अपरंच अठे (भेजने वाले का नाम) चरण (पुत्र का नाम), बाई (पनेता का नाम)/ छोरू (चिरंजीव पनेत का नाम) का मिति (तिथि) का फेरा (विवाह) है सो महरबानी कर सपरिवार दिन चार पेली वेगा पधारसी। आप पधार्‌यां सोभा होसी। आप सिवा दूजी बात जाणां नहीं। संव्त (वर्ष) का मिति (तिथि) लिखी (लिखने वाले का नाम) का जुहार बंचावसी। किरपाकर विवाह में जरूर-जरूर पधारसी।'' कंकोतरी भेजने का गीत भी है- ''कंकू छांटी कंकोतरी मोकलो ए।'' अर्थात् कुमकुम के छींटे देकर पत्रिका भेजो।

(2) गजानंदजी को नूतना :

कुंकुम् पत्रिका छपने पर स्थानीय या पास के मान्य गजानंदजी के स्थान पर जाया जाता है। गृहस्वामी यदि आर्थिक दृष्टि से कमजोर है तो गजानंदजी के समक्ष निवेदन करता है - ''मुझे विवाह खर्च के लिए अर्थ की आवश्यकता है अत: कल आऊंगा सो रूपये ले जाऊंगा।''

मैंने कई लोगों से सुना जो गजानंदजी के मंदिर में जाकर मूर्ति के समक्ष रखा आवश्यकतानुसार जितना धन मांगा, लाये और कौल वचन के अनुसार पुन: लौटाया।

ऐसे गजानंदजी का उदयपुर में बोहरा गणेशजी का स्थान अति लोकप्रिय तथा जाग्रत

है। कई लोग विवाह के लिए इन गणेशजी से धन उधार लाये हैं। ऐसे ही गोगुन्दा के गणेशजी के लिए भी मुझे लोगों ने धन-लाभ पाने को कहा। रणथंभौर के गणेशजी तो प्रसिद्ध हैं ही।

विवाह में गणेशजी के पधारने का नूता, निमंत्रण देने पर उनके पदार्पण से निर्विघ्न विवाह सम्पन्न होता है। वर्षों पूर्व रणथंभौर (गीत में 'रणतभंवर रा आवो विनायक') में मैंने गजानंदजी के दर्शन किये।

वे विवाह के दिन थे। पुजारी के पास प्रतिदिन आनेवाली कंकोतरियों का ढेर लगा हुआ था। वह गजानंदजी के सम्मुख खड़ा हो एक-एक पत्रिका को खोलकर कह रहा था- ''फलाणा गांव में फलाणाजी रे कूकी (बाई) / कूका (बालक) रो फलाणी तिथि नै ब्याव है जो आपनै रिद्धी-सिद्धीजी सागै पधारणो है।''

उदयपुर के बोहरा गणेशजी की भी ऐसी ही मान्यता है। यहां हर समय ही भक्तों की भीड़ बनी रहती है। बुधवार को तो उधर का आवागमन ही अवरूद्ध देखा जाता है। ये देवता भी धन-देव हैं। इनका 'वोरा गणेश' नाम भी इसीलिए पड़ा। गांवों में आज भी वणज करने वाले को वोरा कहते हैं। आर्थिक दृष्टि से वही सबकी समस्या का सुलझाड़ा करता है। कालान्तर में यही 'वोरा' हिन्दी में आकर 'बोहरा' बन गया।

(3) सांजी दिलाना :

वर-वधू, वींद-वींदणी अथवा लड़ा-लाड़ी बनने का शुभारंभ सांजी दिलाने से होता है। मुहूर्तानुसार भाई-गरास्या अर्थात् निकटस्थ समधी तथा आस-पड़ोस की औरतों को निमंत्रित किया जाता है। उनकी उपस्थिति में विवाह सूत्र में बंधने जा रहे कुमार/कुमारी को पाटे पर बिठा दिया जाकर उनके तिलक किया जाता है। नाई द्वारा बालक-बालकी के पीठी की जाती है। हल्दी-तेल मिश्रित बेसन के घोल को पीठी कहते हैं। पूरे शरीर पर इसका लेप किया जाकर प्रतिदिन शरीर शुद्धि की जाती है।

प्रारंभ में पांच थाली में पांच औरतें मिल मुट्ठी दो मुट्ठी मूंग बीनने (साफ करने) का उपक्रम करती हैं। वे आपस में एक-दूसरी की कलाई में लच्छा बांधती हैं। अपनी-अपनी ऊंगली से अपनी टीली देती हैं। विवाह का यह प्रारंभ का लोकाचार होता है। इस अवसर पर जो गीत गाये जाते हैं उनमें विनायक अर्थात् गणेशजी को याद किया जाता है। विनायक के रूप में गढ़ रणतभंवर (गढ़ रणथंभौर) के गणेशजी को सर्वप्रथम याद किया जाकर विवाह में पधारने की अर्जी दी जाती है-

(क) गढ़ रणतभंवर सूं आवो विनायक,
करो अणचींती वरदड़ी

(ख) चालो गजानंद जोसीड़ा रे चालां
आछा-आछा लगन लिखावां ओ गजानंद

पाट अथवा बाजोट का गीत-

जमन्यो बाजोट्यो मोतीड़ा सूं जड़ियो।

पाट से उतारने का गीत-

नाय धोय बालक बनड़ी पाटोला ऊबी
जोवे वांरा समरथ दादासा री वाट
कदी मनै पाटोला सूं झटक उतारे।

अर्थात् नहा-धोकर बाल बनी बाजोट / पाटिये पर खड़ी अपने समर्थ दादाजी की प्रतीक्षा कर रही है कि कब वे जल्दी से उसे पाटेले से उतारें।

पीठी की गीत-

म्हारी हळदी रो रंग सुरंग निपजे मालवे।

सभी उपस्थित महिलाओं को रस्म समाप्ति पर दस-दस तथा उनके साथ के बाल-बालिका को दो से पांच तक की गिनती की पतासी दी जाती है।

(4) वंदोरा खाना :

सांजी देने के दिन से ही वींद-चींदणी को सगे-समधियों तथा पाड़-पड़ोसियों के घर भोजन के लिए आमंत्रित किया जाता है जिसे वंदोरा देना कहते हैं। जीमने को, भोजन करने को वंदोरा खाना कहते हैं। सबसे पहला वंदोरा मामा के घर का होता है। मामा के वहां औरतें गीत गाती जाती हैं।

जीमने में गुड़ की लपसी, चावल तथा सब्जी के रूप में खाटो (कढ़ी) होती है। जीमणोपरांत मामा-मामी वींद-वींदणी की खोल भराई करते हैं जिसमें नारियल-रूपया दिया जाता है। विदाई के वक्त भी औरतें गीत गाती हुई ब्याह-घर लौटती हैं।

मामा के घर जाते समय का गीत -

आज वंदोरो कणी कियो
समंदरिया री उलीपेली पाळ
आज वंदोरा में कांई-कांई जीम्या
फलाणाजी नूत जीमाया ओ राज
आज रा वंदोरा में लापी चोखा जीम्या
नारेळां री खोळ भराई ओ राज।

अर्थात् आज किसने वंदोरा दिया? समंदर (तालाब) की इधर की और उधर की पाल। आज वंदोरे में क्या-क्या जीमा (खाया)? लपसी, चावल जीमे। नारियल की खोल भराई।

खोल भराते समय मामा के घरवालों के नाम क्रमश: बड़े से छोटे रूप में ले-लेकर गीत को वधाया जाता है। ब्याह-घर आकर टीलो जैसे और कई गीत गाये जाते हैं। इनमें पारिवारिक खुशहाली, समृद्धि तथा फलने-फूलने, वंशवृद्धि होने की भावनाएं फलवती होती पाई जाती हैं। यथा-

कुणीसा रे आंगण केवड़ो
कुणीसा रे आंगण जाय
जाय नमे ओ कलियां उघड़े
फूलड़ा रो छैय न पार।

(-प्रस्तुति : शब्द रंजन टीम)

- क्रमशः

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।